



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)  
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 359]

मई दिल्ली, बृहस्पतिवार, जून 20, 1991/ज्येष्ठ 30, 1913

No. 359] NEW DELHI, THURSDAY, JUNE 20, 1991/JYAISTHA 30, 1913

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वी जाती है जिससे यह अक्षर तालुक के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

पर्यावरण और वन मंत्रालय

(पर्यावरण, वन और वन्यजीव विभाग)

अधिसूचना

मई दिल्ली, 20 जून, 1991

का. आ. 416 (प्र).—दहानु तालुका, जिला थाणे (महाराष्ट्र) को परिस्थितीय रूप से नाजुक ध्वेत्र घोषित करने और पर्यावरण पर हानिकर प्रभाव डालने वाले उद्घोगों की स्थापना करने पर प्रतिबंध लगाने के भारत सरकार के द्वारा के खिलाफ दिनांक 8 फरवरी, 1991 के का. आ. सं. 80(ई) और दिनांक 27 फरवरी, 1991 को जारी शुद्धिन्पत्र [का. आ. 147(ई)] के तहत प्रकाशित अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से साठ दिनों की अवधि के भीतर संबंधित लोगों से प्राप्ति आमंत्रित करने के लिए पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 3 की उप धारा (2) के खंड (5) के तहत एक अधिसूचना जारी की गई थी।

और जबकि दहानु तालुका कम्बर्ह के पर्यावरणीय कार्य दलों, दहानु के अधिकारियों, महाराष्ट्र सरकार दहानु उद्योग संबंध दहानु तालुका कृषक समाज आदि से कलिक्षण आपत्तियां प्राप्त हो गई हैं। इन आपत्तियों पर विश्वित विचार किया गया और तदनुसार इस अधिसूचना में कलिक्षण संशोधन गामिल किए गए हैं।

अधिसूचना

केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 2 की उप धारा (2) के खंड (5) हारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, महाराष्ट्र सरकार के परामर्श से, परिस्थितीय रूप से अतिसंवेदनशील दहानु तालुका को संरक्षित करने की आवश्यकता पर विचार करने के पश्चात् और यह सुनिश्चित करने के लिए कि विकास के क्रियाकलाप, पर्यावरण संबंधी सुरक्षा और संरक्षण के सिद्धान्तों से संगत हैं, दहानु तालुका, जिला थाणे (महाराष्ट्र) को परिस्थितीय रूप से नाजुक ध्वेत्र के रूप में घोषित करने और ऐसे उद्घोगों

की जितका पर्यावरण पर हानिकार प्रभाव पड़ता है, स्थापना पर मिंयंबन प्रधिरोधित करती है। उद्योगों और औद्योगिक एककों की स्थापना पर उपायमें में लिए गए मार्गदर्शन के अनुरूप होगा।

तथापि, ऐसी औद्योगिक परियोजनाओं पर जो इस अधिसूचना के आरी किए जाने की तारीख के पूर्व उक्त ताल्लुका में पहले से ही अनुमोदित या विद्यमान है। इस अधिसूचना से उन पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। विद्यमान उद्योगों को सांविधिक मामकों के अनुरूप ही खाली होगा।

महाराष्ट्र सरकार द्वानु ताल्लुका की विद्यमान भूमि पर आधारित ताल्लुका के लिए इस अधिसूचना की तारीख में एक बर्ष की अवधि के भीतर एक मास्टर प्लान या क्षेत्रीय प्लान तैयार करेगी और इसे पर्यावरण और बन मंत्रालय द्वारा अनुमोदित कराएगी। यह मास्टर प्लान या क्षेत्रीय प्लान स्पष्ट रूप से सभी विद्यमान हारित क्षेत्रों, फलोदानों, जनजातीय क्षेत्रीय और अन्य पारिस्थितिकीय रूप से अंतिसंवेदनशील क्षेत्रों का सीमांकन करेगी। ताल्लुका के लिए मास्टर प्लान या क्षेत्रीय प्लान में ऐसे क्षेत्रों के लिए भूमि के उपयोग के किसी भी परिवर्तन को अनुशासन नहीं किया जाएगा। द्वानु ताल्लुका की गहरी परिधि के बारों और 25 किलोमीटर का एक बफर क्षेत्र उद्योग मुक्त रखा जाना चाहिए जिसके लिए मास्टर प्लान में व्यवस्था की जानी चाहिए। अनुमेय उद्योगों के व्यवस्थान के लिए द्वानु ताल्लुका के भीतर कुल क्षेत्र अधिकतम 500 एकड़ तक निर्धारित होगा। औद्योगिक एकक ऐसे स्थलों पर अवस्थित होंगे जो पर्यावरण की दृष्टि से प्रतिप्राह्य हों।

भारत सरकार द्वारा अधिसूचित पर्यावरण (मुराका) अधिनियम नियमावली में परिसंकटमय रसायनों के लिए निर्धारित सीमा/मात्रा से अधिक रसायनों का प्रयोग करने वाले उद्योग परिसंकटमय उद्योग समझे जाने चाहिए। परिसंकटमय अपशिष्ट को एहतिहायती उपाय उठाने के बाद अभिनिर्धारित क्षेत्रों में निपटाया जाए। निपटान क्षेत्रों को सावधानी पूर्वक निर्धारित किया जाना है, उनकी निगरानी की जानी है और मास्टर प्लान में स्थान(का) का अभिनिर्धारण किया जाएगा। तथा यह यथासंभव औद्योगिक सम्पदा के लिए अभिनिर्धारित 500 एकड़ क्षेत्र के परिसर के भीतर होगा।

महाराष्ट्र सरकार अधिसूचना में बताई गई भारों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए एक समिति गठित करेगी जिसमें स्थानीय प्रतिनिधियों को शामिल किया जाएगा।

[सं. 13011/24/87—ग्राइ. ए]

र. राजाभणि, सचिव

अनुबंध

महाराष्ट्र के बाणे जिसे के द्वानु ताल्लुका में उद्योगों तथा औद्योगिक इकाइयों को अनुमति देने/प्रतिबंध लगाने के लिए दिला-निर्देश।

पर्यावरण और पारिस्थितिकीय आधार पर द्वानु ताल्लुका में इस प्रकार की औद्योगिक गतिविधियों की अनुमति देने/

उम पर प्रतिबंध लगाने के लिए उद्योगों द्वारा तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जायेगा, अर्थात् हरी, नारंगी और लाल। यदि इसमें संदेह हो कि कोई उद्योग किस श्रेणी में आता है, इस बारे में पर्यावरण और बन मंत्रालय को लिखा जायेगा और ऐसे उद्योग को तब तक अनुमति नहीं दी जायेगी जब तक कि पर्यावरण और बन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उसे मंजूरी नहीं दी जाती है। केवल हरी और नारंगी श्रेणियों के असर्वत आने वाले विद्यमान उद्योगों के विस्तार/आधुनिकीकरण को गुणवोष के आधार पर विचार किया जायेगा।

हरी श्रेणी :

पर्यावरण और बन मंत्रालय, भारत सरकार की पूर्व मंजूरी के बिना अनुमोदित औद्योगिक क्षेत्रों में मंजूरी/नामंजूरी के लिए महाराष्ट्र सरकार की एजेंसियों द्वारा जिन उद्योगों पर विचार किया जा सकता है, उनकी मूल्य (वशरों कि निम्नलिखित शर्तों पूरी हों) ;

1. केवल गैर-हानिकार और गैर-परिसंकटमय उद्योगों को मंजूरी दी जाएगी (हानिकार और परिसंकटमय उद्योगों में ज्वलनशील, विस्फोटक, कायाकारी या विषाक्त पदार्थों का इस्तेमाल करने वाले उद्योग आते हैं)।

2. प्रदूषित औद्योगिक बहिस्थानों का विसर्जन न करने वाले उद्योगों को ही मंजूरी दी जाएगी।

टिप्पणी : निम्नलिखित कार्यों या कार्यों को करने वाले उद्योगों को प्रदूषित औद्योगिक बहिस्थानों का विसर्जन करने वाले उद्योग जाना जायेगा, अर्थात् :—

एलोक्ट्रोप्लेटिंग

गालबेनाइजिंग

ब्लींकिंग

डिग्रीजिंग

फास्केटिंग

रंगाई

फिकलिंग

चर्मशोषण

पालिंग

रेशों की पकाना

खालों की डाइजस्टिंग

बस्तों की डिजाइनिंग

लोम हटाना, सूखाना, डिलिंग तथा बस्तों की धुलाई

एल्कोहल का आसवन, स्टिलेज बाष्पन

गश्तों का रस निकालना, फिल्टर करना, अपकेल्डन

लकड़ी के कोयले का निर्माण

चीनी तैयार करने के लिए आसवन,

एम डी संयंकों में बैकवाल फिल्टरिंग

लुगाई बनाना, सुगदी प्रसंस्करण और कागज बनाना

कोयला बनाना

आकस्माइंडों की स्ट्रिपिंग

हाइड्रोलिक विसर्जन के जरिए प्रयुक्त रेत की धुलाई

टेक्स की धुलाई

विलायक निकालना

3. अपनी विनिर्माण प्रक्रिया में कोयले का प्रयोग करने वाले उद्योगों को ही मंजूरी दी जायेगी।

4. केवल उन्हीं उद्योगों को मंजूरी दी जायेगी, जो विकीर्ण प्रकार की अस्थाई उत्सर्जनों का विसर्जन नहीं करेंगे।

टिप्पणी :

1. उपर्युक्त शर्तों को पूरा करने पर आमतौर पर गैर-हानिकर, गैर-परिसंकटमय और गैर-प्रदूषक श्रेणी में आने वाले कुछ उद्योग निम्नलिखित हैं:—

आवल मिलें, दाल मिलें, अनाज मिलें (आटा उत्पादन के लिए)

मुपारी उत्पादन और भसाला पिसाई

मूँगफली के छिलके निकालना (शुष्क)

द्रुतशीतल संरचना और शीत भंडार

बर्फ बनाना

मछली क्रस्टेशिप्स और इसी तरह के खाद्यों का परिरक्षण तथा प्रसंस्करण

दुर्घट और मक्खन, धी आदि जैसे दूरी उत्पादों का निर्माण बुक बाइंडिंग

उत्कीर्णन, निक्षारण, ब्लाक बनाना

पत्थर की वस्तुओं का निर्माण, पत्थरों पर लिंगाइन बनाना और उन पर पालिश करना (पत्थर पिसाई/पत्थर उत्थान की अनुमति नहीं दी जाएगी) प्रिल, गेट दरवाजे और लिंगकी फेम, पानी के टैक, तार के जास आदि जैसे धातु निर्माण अवयवों का निर्माण (कोयले के प्रयोग की अनुमति नहीं जाएगी)।

ओजारों को ऐमा करने से संबंधित कार्य,

विशुल उपकरणों की मरम्मत

खींचने वाली रेलवियों, हाथ की रेलवियों, बैलगाड़ियों आदि का निर्माण जेवर और उनसे संबंधित वस्तुओं का निर्माण (विजली का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा)।

घड़ियों, दीवार घड़ियों, जेवरातों की मरम्मत बीड़ी निर्माण हृथकरवे/पावर से छलने वाले करवे। कड़ाई और लेस तथा धारियों बनाना।

परदे, मछलरदानियां, चटाईयों, आदरें, तकिये के गिलाफ, बैग आदि जैसा कपड़े का सामान बनाना।

बमे बनाए कपड़े तथा परिधाना बनाना (श्राई प्रोसेसिंग)।

सूती और ऊनी होजरी (श्राई प्रोसेसिंग)

हृथकरवे से बुलाई।

चपड़े के जूतों तथा चपड़े के सामान का निर्माण

(टैनिंग तथा हाइड्रोसेसिंग के अतिरिक्त)

जूते के फीते बनाना।

शीशों तथा फोटोफोटों का निर्माण।

वादा उपकरणों का निर्माण।

खेल कूद के सामान का निर्माण।

बांस तथा बैंत के सामान का निर्माण (केवल ध्राई आपरेशन) कार्ड बोर्ड और कागज का सामान बनाना (कागज तथा सुगदी के सामान के अतिरिक्त)

पृथक्करण तथा अन्य कोटेड पेपर (कागज तथा सुगदी के सामान के अतिरिक्त)।

वैज्ञानिक और गणितीय उपकरणों का निर्माण।

घरेलू विजली तथा इलेक्ट्रोनिक उपकरणों का सजीकरण।

लिखने के सामान का निर्माण (पेन, पैसिल आदि)।

पोलीथील, प्लास्टिक तथा पीवीसी की चीजों की एक्स्ट्रूजन (माल्डिंग)

शस्य जाली तथा पट्टियों का निर्माण।

कंकीट की रेलवे स्लीपरों का निर्माण।

सूती कपड़े की कताई और बुनाई (केवल ध्राई प्रोसेसिंग) रस्सियों का निर्माण (सूत, जूट प्लास्टिक)

कालीन बुलाई।

तारों तथा पाइपों का निर्माण (नाम एबेस्टॉप)

एक्स्ट्रूजन आफ बेट्टे।

विजली तथा इलेक्ट्रोनिक उपकरणों का सजीकरण।

कायर इंडस्ट्रीज।

खिलौने

मोमबत्तियां और अगरबत्तियां।

आयल गिनिंग और एक्सपेलिंग (कोई हाइड्रोजनेशन तथा परिष्करण नहीं)

आइस-क्रीम बनाना।

खनिज जल बनाना।

ट्रॉकों और सूटकेसों का निर्माण।

स्टेशनरी की मदों का निर्माण (कागज और स्याही के अतिरिक्त) आप्टीकल फेमों का निर्माण।

कार्यालय तथा घरेलू कॉन्फर्म और उपकरणों का विनिर्माण-लकड़ी एवं स्टील दोमों।

1. (भशीनीरी, भशीन के ओजारों और उपकरणों (लघु) का विनिर्माण।

तार ध्राइंग (शीत प्रक्रिया), तार नेल्ज, बेलिंग स्ट्रैप। इस्टेमट काफी जाय के कारखाने।

कोयले/कोक के धानावा अम्ब ईंधन के प्रयोग द्वारा जींशे के बतेन।

आप्टीकल खास।

प्रयोगशाला बर्तन।

बैकरी उत्पाद, बिस्कूट और भिट्ठी।

आटे की धूकियां आटे की (रोलर अक्सियों को छोड़कर)

इस सूची में उद्योगों को सुविधा के लिए शामिल किया गया है और यदि किसी मामले में वे उपर्युक्त श्रेणी में नहीं आते तो उन्हें नारंगी तथा लाल श्रेणियों में रखा जाएगा।

नारंगी श्रेणी

उन उद्योगों की सूची, जिन्हें पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा अनुमोदित उपर्युक्त पर्यावरणीय भूल्यांकन और पर्याप्त प्रदूषण नियन्त्रण उपायों के साथ दहानु तालुका में चलाने की अनुमति दी जा सकती है।

मृत्तिका

मीट का संरक्षण और केनिंग

बिजली के भौजूदा अनुमोदित संयंत्रों से उत्पन्न राष्ट्र से इंटों, टाइलों, ब्लाकों, पाइपों आदि जैसी संवन निर्माण की सामग्री का विनिर्माण।

सफाई के बर्तन

हेलों से विस्तारक द्रव्य निकालने समेत वनस्पति धी

साबुन (वाष्प क्षयन प्रक्रिया के बिना)

सिथेटिक डिटर्जेंट बनाना (नान-फासफेटिक)

वाष्प पैदा करने वाले संयंत्र (फोयला/कोक के बिना) और शैलोगिक गैसों का निर्माण (केवल नाइट्रोजन, आक्सीजन और कार्बन डाइ आक्साइड)

प्रोफेलेक्टिक्स और लेटेक्स उत्पादों को छोड़कर संजिकल और बेडिक्स उत्पाद रबड़ के जूते

माल खाद्य

पर्याप्त कम्प्रेशनरों, प्रशीतन, यूनिटों, अग्नि उपशमन उपकरणों आदि का निर्माण।

विकित्सा और शल्य चिकित्सा उपकरण।

सुनंध, सुरस और भोज्य संयोजी

कार्बनिक पोथा पोषक

वातिक जल/साफ्ट ड्रिक्स

उपर्युक्त श्रेणी में आने वाले 3 करोड़ रुपये से अधिक परिव्यय वाले उद्योगों को भारत सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय के विवारार्थ भेजा जाएगा।

उपर्युक्त श्रेणी में आने वाले 3 करोड़ रुपये से कम परिव्यय वाले उद्योगों को राज्य सरकार के पर्यावरण विभाग और महाराष्ट्र प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड द्वारा पर्यावरणीय स्वीकृति दी जायेगी।

लाल श्रेणी

उन उद्योगों की सूची, जिनको दहानु तालुका में चलाने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

इन श्रेणी में आने वाले उद्योगों की श्रेणी में निम्न-सिद्धि शामिल हैं:—

डलाई खातों और मिश्रधातु बनाने की प्रक्रिया में शामिल धातु विशाली उद्योग कोयला और अत्य खनिज प्रसंस्करण उद्योग

सीमेंट संयंत्र

कोयला/कोक के उपयोग पर आधारित उद्योग तेल शोधक कारखाने

पैट्रो रसायन उद्योग

सरिलिप्ट रबड़ विनिर्माण

ताप और नाभिकीय विद्युत संयंत्र

श्रीद्योगिक प्रयोजनों के लिए वनस्पति, हाइड्रोजेनेटेड वनस्पति तेलों का विनिर्माण

चीनी मिले

कोक शोवन्स के सह उत्पाद और कोल तारकोल प्रस्तुवन चत्पादों का विनिर्माण

अल्कालिक और एसिड

विद्युत ताप उत्पादों (कृत्रिम प्रपर्षी, केलियस कार्बाइड इत्यादि जैसे)

फासफोरस और इसके यौगिक

विस्कोटक

फायर क्रेक्स

तालिक अनहाइड्राइड

कलोरोक्ल इंड्रो-कार्बन वासी प्रक्रियाएं

कलोरनफ्लोरन शीलोन आयोडीन और उसके यौगिक रसायनिक उत्पर्क

सिथेटिक फाइबर्स और रेयोन

सिथेटिक कटनाश/कटानुमाश/जलनाश/फूदनाश इत्यादि का प्रतिशत और निर्माण।

मौलिक ग्रौषणियां।

एल्कोहॉल

कसाइब्लाना

पश्चिमों की खाल, अम्हाड़ा आदि का संसाधक और प्रसंस्करण गुब्बारों के विनिर्माण सहित प्लास्टिक ग्रथवा लेटेक्स उद्योग कोक बनाना, कोयले का द्रवकरण

जलाने की गैस का विनिर्माण

फाइबर गलास उत्पादन या प्रसंस्करण

रंगाई और उत्पक्षी इंटरमेडिएट्स

श्रीद्योगिक कार्बन और कार्बन उत्पाद

विद्युत रसायन और उनके उत्पाद

पेंटेस इनेमेस और वार्निश

पोल ब्रिनाइल क्लोराइड  
 पोलो प्रोपाइलीन  
 क्लोरोरेट्स पार्किलोरेट्स और पैरोक्साइड  
 पोलिस  
 सिथेटिक रेजिन्स  
 प्लास्टिक  
 एस्बेस्टास  
 पत्थर तोड़ने के कारखाने

टिप्पणी : जो उच्चीग ऊपर दर्शाये गई तीनों श्रेणियों में से किसी में भी नहीं आते उनके व्यावरण के मामले में निर्णय तीन करोड़ से कम परिवर्ष वाली परियोजनाओं के लिए राज्य सरकारों द्वारा लिया जाएगा और अन्य मामलों को पर्यावरण और बन मंत्रालय, भारत सरकार को भेजेगा।

## MINISTRY OF ENVIRONMENT AND FORESTS

(Department of Environment, Forests and Wildlife)

### NOTIFICATION

New Delhi, the 20th June, 1991.

S.O. 416 (E):—Whereas a notification under Clause (v) of Sub-section (2) of Section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986, inviting objections from the concerned quarters within a period of sixty days from the date of publication of the said notification, against Govt.'s intention to declare Dahanu Taluka, District Thane (Maharashtra) as an ecologically fragile area and to impose restrictions on the setting up of industries which have detrimental effect on the environment was published vide S. O. No. 80 (E), dated 8th February, 1991 and Corrigendum (S. O. 147 (E) issued on 27th February, 1991).

And whereas certain objections were received from Environmental Action Groups of Dahanu & Bombay, individuals of Dahanu, Govt. of Maharashtra, Dahanu Industries Association, Dahanu Taluka Krushak Samaj etc. These objections were duly considered and accordingly certain modifications have been incorporated in this notification.

### NOTIFICATION

In exercise of powers conferred by clause (v) of sub-section (2) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986, the Central Government, in consultation with the Government of Maharashtra, after considering the need for protecting the ecologically sensitive Dahanu Taluka, and to ensure that the development activities are consistent with principles of environmental protection and conservation, hereby declare Dahanu Taluka, District Thane (Maharashtra) as an ecologically fragile area and to

impose restrictions on the setting up of industries which have detrimental effect on the environment.

The location for siting of industries and industrial units shall be in conformity with the Guidelines given in the Annexure.

However, the industrial projects already approved or in existence in the said Taluka before the date of issue of this notification, will not be affected by this notification. The existing industries shall have to conform to the statutory standards.

The Government of Maharashtra will prepare a Master Plan or Regional Plan for the Taluka based on the existing and land use of Dahanu Taluka within a period of 1 year from the date of this notification and get the plan approved by the Ministry of Environment & Forests. This Master Plan or Regional Plan will clearly demarcate all the existing green areas, orchards, tribal areas and other environmentally sensitive areas. No change of existing land use will be permitted for such areas in the Master Plan or Regional Plan for the Taluka. A buffer zone of 25 kms. should be kept free of industries around the outer periphery of Dahanu Taluka for which provision may be made in the Master Plan. The total area within the Dahanu Taluka for location of permissible industries will be restricted to a maximum of 500 acres within the industrial areas earmarked in the Master Plan. The industrial units will be located at sites that are environmentally acceptable.

Industries which are using chemicals above the limits/quantities as prescribed in the Environment Protection Act Rules for hazardous chemicals, notified by the Government of India, should be considered hazardous industries. Hazardous waste may be disposed off in the identified areas after taking precautionary measures. The disposal areas have to be prescribed carefully, monitored and enforced and the site(s) will be identified in the Master Plan and will be, as far as possible, within the premises of the 500 acres area identified for the Industrial estate.

The Government of Maharashtra will constitute a monitoring Committee to ensure the compliance of the conditions mentioned in the notification, in which local representatives may be included.

[No. J-13011/24/87-IA]  
 R. RAJAMANI, Secy.

### ANNEXURE

#### GUIDELINES FOR PERMITTING/RESTRICTING INDUSTRIES AND INDUSTRIAL UNITS IN THE DAHANU TALUKA, THANE DISTRICT IN MAHARASHTRA

Industries will be classified under three categories, viz. Green, Orange and Red as shown below for

purposes of permitting/restricting such industrial activities in Dahanu Taluka on the basis of environmental and ecological considerations. In case of doubt as to the category in which the industry falls, a reference shall be made to the Ministry of Environment & Forests, Government of India, and such industry will not be permitted until cleared by the Ministry of Environment & Forests, Govt. of India. Expansion/modernisation of existing industries falling in green and orange categories only would be considered on merit. Some restriction in Volume of waste water generated, i.e. 2 to 3 CMD may be imposed for certain type of small scale units falling under Green or Orange categories.

#### GREEN CATEGORY

List of industries that can be considered by the Maharashtra Government agencies for approval/rejection in approved industrial areas without prior approval of the Ministry of Environment & Forests, Government of India (provided that all the following conditions are satisfied) :

1. Only those industries that are non-obnoxious and non-hazardous will be permitted. (Obnoxious and hazardous industries include those using inflammable, explosive, corrosive or toxic substances.)

2. Only those industries that do not discharge industrial effluents of a polluting nature will be permitted.

Note :— Industries that undertake any of the following processes or process of similar nature shall be regarded as industries that discharge industrial effluents of a polluting nature, namely :—

Electroplating

Galvanizing

Bleaching

Degreasing

Phosphating

Dyeing

Pickling

Tanning

Polishing

Cooking of fibres.

Digesting of hides.

Desizing of fabrics.

Removal of hair, soaking deliming and washing of fabric.

Distillation of alcohol stillage evaporation.

Crushing of sugarcane, filtration, centrifugation, distillation for extraction of sugar.

Manufacture of charcoal.

Canning and processing of fruits and vegetables including production of Jam, Jelly, Sauce etc.

Filtering backwash in D.M. Plants.

Pulp making, pulp processing and paper making.

Coking of coal.

Stripping of oxides.

Washing of used sand by hydraulic discharge.

Solvent extraction.

3. Only those industries that do not use coal in their manufacturing process will be permitted.

4. Only those industries that do not emit fugitive emissions of a diffused nature will be permitted.

Note :—(1) Some of the industries that ordinarily fall in the non-obnoxious, non-hazardous and non-polluting category, subject to fulfilment of the above conditions are :—

Rice Mills, Dal Mills, Grain Mills (for production of flour).

Manufacture of supari and masala grinding.

Groundnut decorticating (dry).

Chilling Plants and cold storages.

Ice making.

Preserving and processing of fish, crustaceous and similar foods.

Manufacture of milk and dairy products such as butter, ghee, etc.

Book binding.

Engraving, etching, blockmaking.

Manufacturer of structural stone goods, stone dressing and polishing (stone crushing/stone quarrying will not be permitted).

Manufacture of metal building component such as grills, gates, doors and window frames, water tanks, wire nets, etc. (use of coal not permitted).

Tool sharpening works.

Repairs of electrical appliances.

Manufacture of push carts, hand carts, bullock carts, etc.

Manufacture of jewellery and related articles (no power to be used).

Repairs of watches, clocks, jewellery.

Manufacture of bidis.

Handlooms, Powerlooms.

Embroidery and the making of laces and fringes.

Manufacture of made up textile goods such as, curtains, mosquito nets, mattresses, bedding material, pillow cases, bags, etc.

Ready-made garments and Apparel making (dry processing).

Cotton and woolen hosiery (dry processing).  
 Handloom weaving.  
 Manufacture of leather foot wear and leather products (excluding tanning and hide processing).  
 Shoe lace manufacturing.  
 Manufacture of mirrors and photoframes.  
 Manufacture of musical instruments.  
 Manufacture of sports goods.  
 Manufacture of bamboo and cane products (dry operations only).  
 Manufacture of cardboard and paper products (Paper and pulp manufacture excluded).  
 Insulation and other coated papers (Paper and pulp manufacture excluded).  
 Manufacture of scientific and mathematical instruments.  
 Assembly of domestic electrical and electronic appliances.  
 Manufacture of writing instruments (pens, pencils, etc.).  
 Extrusion moulding of polythene, plastic and PVC goods.  
 Manufacture of surgical gauzes and bandages.  
 Manufacture of concrete railway sleepers.  
 Cotton spinning and weaving (dry processes only).  
 Manufacture of ropes (cotton, jute, plastic).  
 Carpet weaving.  
 Manufacture of wires and pipes (non-asbestos).  
 Extrusion of metal.  
 Assembly of electric and electronic equipment.  
 Coir industries.  
 Toys.  
 Wax candles and agarbatis.  
 Oil-ginning and expelling (no hydrogenation and no refining).  
 Manufacture of ice-cream.  
 Manufacture of mineral water.  
 Manufacture of trunks and suitcases.  
 Manufacture of stationery items (except paper and inks).  
 Manufacture of optical frames.  
 Manufacture of office and household furniture and appliances—both steel and wood.  
 Manufacture of machinery and machine tools and equipment (small-scale).  
 Wire drawing (cold process), Wire Nails, Baling straps.  
 Processing of instant Coffee/tea.  
 Glassware using fuel other than coal/coke.  
 Optical Glass.  
 Laboratoryware.

Bakery products, biscuits and confectionery.  
 Flour mills (excluding Roller flour mills).

(2) The inclusion of industries in this list is for convenience and if in a given case they do not fall in the above category they will be treated as in the Orange or Red Categories.

#### ORANGE CATEGORY

List of industries that can be permitted in Dahanu Taluka with proper Environmental Assessment and adequate Pollution Control Measures in sites that have been approved by the Ministry of Environment & Forests, Government of India.

Ceramics.

Preservation of meat and canning.

Manufacture of building materials, such as bricks, tiles, blocks, pipes etc. from fly ash generated from the approved/existing power plants.

Sanitaryware.

Vegetable oils including solvent extracted oils.

Soap (without steam boiling process).

Formulation of synthetic detergents (non-phosphatic).

Steam generating plants (without coal/coke).

Manufacture of industrial gases (only Nitrogen, oxygen and  $\text{CO}_2$ ).

Surgical and Medical products, excluding prophylactics and latex products.

Rubber Foot wear.

Malt foods.

Manufacture of pumps compressors, refrigeration units and fire fighting equipment.

Medical and surgical instruments.

Fragrances, flavours and food additives.

Organic plant nutrients.

Aerated waters/soft drinks.

Industries falling within the above category with an outlay exceeding Rs. 3 crores will have to be referred to the Ministry of Environment & Forests, Government of India for consideration.

Industries falling within the above category with an outlay not exceeding Rs. 3 crores shall be granted environmental clearance by the State Government Environment Deptt. and the MPCB.

#### RED CATEGORY

List of industries that cannot be permitted in Dahanu Taluka.

The illustrative list of industries that fall within this category include :—

Metallurgical industries including foundries and alloy making processes.

Coal and other mineral processing industries.	Alcohol.
Cement Plants.	Slaughterhouse
Industries based on the use of coal/coke.	Tanning and processing of animal, skins, hides, leather, etc.
Refineries.	Plastic or latex industry including manufacturing of Balloon.
Petrochemical industries.	Making of coke, liquefaction of coal.
Synthetic Rubber Manufacture.	Manufacture of fuel gas.
Thermal and nuclear power plants.	Fibre glass production or processing.
Manufacture of vanaspati, hydrogenerated vegetable oils for industrial purposes.	Dyes and their intermediates.
Sugar Mills.	Industrial carbon and carbon products.
Manufacture of by-products of coke ovens and coal tar distillation products.	Electro-chemicals and their products.
Alkalies and acids.	Paint, enamels and varnishes.
Electro-thermal products (such as artificial abrasives, calcium carbide, etc.).	Poly vinyl chloride.
Phosphorus and its compounds.	Polypropylene.
Nitrogen compounds.	Chlorates, per chlorates and peroxides.
Explosives.	Polisties.
Fire-crackers.	Synthetic resins.
Pthalic anhydride.	Plastics.
Processes involving chlorinated hydrocarbons.	Asbestos.
Chlorine, fluorine, bromine, iodine and their compounds.	Stone Crushing Units.
Chemical fertilizers.	
Synthetic fibres and rayon.	
Manufacture and formulation of synthetic pesticides/insecticides/bactericides/fungicides etc.	
Basic drugs.	

Note :—The case of industries which do not fall in any of the above mentioned three categories, decision in regard to their classification will be taken by the State Government for those projects having an outlay not exceeding Rs. 3 crores and for others reference is to be made to the Ministry of Environment & Forests, Government of India.